पाठ - 3

जल-प्रलय

I पाठ-संबंधी विचार

1. उत्पत्ति 6:1-7- परमेश्वर ने बुराई से भरी मनुष्य जाति का नाश करने का फैसला कर लिया।
2. उत्पत्ति 6:8-9- परमेश्वर ने नूह पर अनुग्रह की दृष्टि की।
3. उत्पत्ति 6:13-22- परमेश्वर ने नूह को एक जहाज़ बनाने की आज्ञा दी।
4. 1 पतरस 3:18-22- हमारे लिए परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना आवश्यक है।

II विषय-वस्तु:

मनुष्य इतना बुरा हो गया था कि उसके विचार सदा बुरे ही होते थे और वे बुरे से बुरे होते जा रहे थे। परमेश्वर को दुख: हुआ कि उसकी सृष्टि बुराई से भर गई है, और उसने सब शरीरों को जिनमें जीवन का श्वास था नाश करने का मन बना लिया। परन्तु नूह पर यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि हुई और वह परमेश्वर की योजना और रक्षा के कारण जल-प्रलय से बचाया गया। इस प्रकार जल-प्रलय से पता चलता है कि परमेश्वर के पास बुरे लोगों को नाश करने और जिन्हें वह सम्भालता है उन्हें अपने अनुग्रह से बचाने की सामर्थ है।

1. परमेश्वर ने संसार को पानी के साथ नाश करने का मन बनाया:

क) मनुष्य जाति की बुराई बढ़ने के कारण- उत्पत्ति 6:5-7,11-13.

ख) पृथ्वी को साफ़ करके धार्मिकता को नये सिरे से आरम्भ करने के लिए- उत्पत्ति 6:17-18.

2. नूह पर यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि हुई:

क) क्योंकि वह परमेश्वर के साथ चलता था- उत्पत्ति 6:8-9.

ख) क्योंकि उसने आज्ञा मानकर परमेश्वर को आदर दिया- उत्पत्ति 6:22.

3. परमेश्वर ने नूह को जहाज़ बनाने की आज्ञा दी:

क) परमेश्वर ने उसे एक योजना दी- उत्पत्ति 6:14-16.

ख) नूह ने परमेश्वर की योजना पर अमल किया- उत्पत्ति 6:22.

4. परमेश्वर ने नूह को बचाया:

क) परमेश्वर ने उन्हें जहाज़ में बन्द कर दिया- उत्पत्ति 7:16.

ख) परमेश्वर ने संसार को शुद्ध करने के लिए जल-प्रलय भेजी- उत्पत्ति 7:11-12,17-24

ग) परमेश्वर उन्हें जहाज़ में से बाहर लाया- उत्पत्ति 8:1-19.

5. परमेश्वर ने नूह के साथ वाचा बांधी:

क) परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की।

ख) परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि जब तक पृथ्वी कायम रहेगी वह इसे पानी से नाश नहीं करेगा- उत्पत्ति 8:21-22; 2 पतरस 3:5-13.

ग) परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी कि फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ- उत्पत्ति 9:1-17.

घ इस वाचा के स्मरण के लिए धनुष का चिह्न दिया गया- उत्पत्ति 9:8-17.

III व्यावहारिक प्रासंगिकताएं:

1. नूह की तरह हमें भी जीवन में परमेश्वर की योजना को मानने में हमें भी बड़ी सावधानी से काम करना चाहिए- यूहन्ना 3:16; इब्रानियों 5:9; रोमियों 6:17; रोमियों 8:28-39.
2. हमारे लिए यह समझना ज़रूरी है कि बपतिस्मे में परमेश्वर की शक्ति परमेश्वर की आज्ञा मानने और उसके आगे झुकने के कारण आती है, और यीशु मसीह में विश्वास किए बिना पानी में डूबने का कोई लाभ नहीं- 1 पतरस 3:18-22; 1 कुरिन्थियों 15:1-4; कुलुसियों 2:11-13.
3. हमें याद रखना चाहिए कि इस संसार की वस्तुओं का आग से विनाश होगा। 2 पतरस 3:8-14; 2 कुरिन्थियों 5:16-18.

IV याद करने के लिए आयत: 1 पतरस 3:18-22, ''इसलिए कि मसीह ने भी, अर्थात अधर्मियों के लिए धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए: वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा आत्मा के भाव से जिलाया गया। उसी में उस ने जाकर कैदी आत्माओं को भी प्रचार किया। जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न मानी जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज़ बन रहा था, जिस में बैठकर थोड़े लोग और उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात आठ प्राणी पानी के द्वारा बचाए गए, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)। वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके आधीन किए गए हैं।''